महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकीअनुप्रयोगअनुसंधान संस्थान कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)-273165

समाचार – पत्रिका

अंक – 11 | **नवम्बर, 2021**

प्रो. उदय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान

गोरखनाथ, गोरखपुर

संदेश

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(उदय प्रताप सिंह)

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
एक नजर में

कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रुप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता हैं।

महाययोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा नवम्बर, 2021 में किये गये कार्य

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	1	30

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) SC SP परियोजना के अंतर्गत सब्जी बीज का प्रदर्शन (किचन गार्डन)	10	1000
ख) पोषण वाटिका (न्यूट्रिशनल गार्डन)	0.14	20
ग) सरसो में सल्फर पोषक तत्व प्रबन्धन	02	14
घ) प्याज की उन्नतशील प्रजाति ALR परीक्षण का प्रदर्शन	0.25	10
ङ) गेहूँ की प्रजाति HD 2967 का प्रदर्शन	03	15
च) सरसो की प्रजाति पूसा विजय, पूसा तारक का प्रदर्शन	04	20
छ) गाजर की प्रजाति पूसा रुधिरा का प्रदर्शन	0.25	10
ज) मटर की प्रजाति पूसा प्रगति	0.20	04
झ) पालक की प्रजाति पूसा भारती	0.20	10
ञ) हरे चारे के रुप में बरसीम का प्रदर्शन	04	30
ट) गेहूँ की प्रजाति DBW 187 का प्रदर्शन	06	45

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	लाभार्थी संख्या
क) स्कूल जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य सुधार के लिए पोषक लड्डू का मूल्यांकन	10
ख) मिर्च फसल में ग्रोथ हारमोंस का प्रभाव	05
ग) सब्जी मटर की उन्नतशील प्रजाति काशी मुक्ति का परीक्षण	05

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	08	18
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	48	48
ग) मोबाइल सलाह	34	सामूहिक
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	11	सामूहिक

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

❖ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय, मृदा विशेषज्ञ द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन सरसो में सल्फर पोषक तत्व प्रबन्धन के अन्तर्गत 14 सहभागी कृषकों को 02 हे. क्षेत्रफल हेतु सल्फर उर्वरक का वितरण किया गया साथ ही कृषकों को सल्फर उर्वरक प्रबन्धन के बारे में बताया गया।	
❖ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, उद्यान विशेषज्ञ द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन प्याज के उन्नत प्रजाति का आंकलन के अन्तर्गत 10 सहभागी कृषकों को 0.25 हे. क्षेत्रफल हेतु प्याज का बीज (ए.एल.आर.) का वितरण किया गया साथ ही कृषकों को प्याज की प्रजाति ए.एल.आर. के बारे में बताया गया।	
❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह, कृषि प्रसार विशेषज्ञ द्वारा IARI – CATAT, नई दिल्ली के विवो पार्टनर्स के प्रदर्शन योजनान्तर्गत गेहूं की HD 2967, सरसो की पूसा तारक एवं पूसा विजय, मटर की पूसा प्रगति, गाजर की पूसा रुधिरा तथा पालक की पूसा भारती के उन्नतशील बीज कुल 07.65 हे. में 59 कृषकों में वितरित किया गया।	
❖ डॉ विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ (DBW 187) का बीज कुल 06 हे. में 45 कृषकों में वितरित किया गया।	
❖ डॉ विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत बरसीम (BL – 42) का बीज कुल 04 हे. में 30 कृषकों में वितरित किया गया।	

प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ डॉ राहुल कुमार सिंह, प्रसार विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 24/11/2021 रानाडीह (भरोहिया) में गोभी की प्रजाति पूसा मेघना पर चल रहे प्रदर्शन का भ्रमण किया गया। इस अवसर पर रानाडीह के कृषक सुरेश एवं रोशन उपस्थित रहे।	
❖ श्रीमती श्वेता सिंह, गृह विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा चौकमाफी पीपीगंज में पोषक वाटिका के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया। सब्जियों में लग रहे कीटों के नियंत्रण की जानकारी दी गयी।	
❖ श्रीमती श्वेता सिंह, गृह विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा राखूखोर, पीपीगंज में पोषक वाटिका के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया। सब्जियों में जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशक के प्रयोग करने की जानकारी दी गयी।	
❖ श्रीमती श्वेता सिंह, गृह विज्ञान विशेषज्ञ द्वारा रायगंज, खोराबार में पोषक वाटिका के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया । सब्जियों में पाये जाने वाले पोषक तत्वों की जानकारी दी गयी।	

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय, मृदा विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 26/11/2021 को एन.आर.एल.एम. संस्था ब्लॉक जंगल कौड़िया द्वारा ग्राम जिन्दापुर पंचायत भवन में आयोजित केंचुआ खाद उत्पादन विषय पर व्याख्यान दिया गया। जिसमें कुल 20 महिला कृषकों ने प्रतिभाग किया।	

❖ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय, मृदा विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 16/11/2021को कृषि विद्यालय चरगांवा में प्रशिक्षित कृषि उद्यमी स्वालम्बन (एग्री जंक्शन) योजनान्तर्गत 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान दिया गया। जिसमें कुल 25 कृषि छात्रों ने प्रतिभाग किया।	
❖ डॉ विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 03/11/2021 को केन्द्र पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत बरसीम (BL – 42) का बीज वितरित किया गया। जिसमें कुल 30 कृषकों ने प्रतिभाग किया।	
❖ डॉ विवेक प्रताप सिंह, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 29/11/2021 को केन्द्र पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ (DBW 187) का बीज वितरित किया गया। जिसमें कुल 45 कृषकों ने प्रतिभाग किया।	

कृषि विभाग एवं जिलाधिकारी के साथ बैठक

❖ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय,मृदा विशेषज्ञ द्वारा जिलाधिकारी, गोरखपुर की अध्यक्षता में आयोजित आत्मा एवं एन.एफ.एस.एस. कमेटी की बैठक में प्रतिभाग किया गया।	
❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह, कृषि प्रसार विशेषज्ञ द्वारा केन्द्र एवं दी.द.उ.गो.वि. गोरखपुर के अन्तर्गत निर्मित फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी के निदेशक मंडल के सदस्यों के साथ उपनिदेशक कृषि एवं जिला कृषि अधिकारी कार्यालय का भ्रमण कर फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनीयों का पंजीकरण करवाया गया।	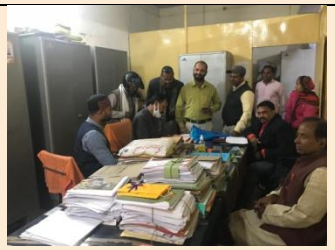

कृषक गोष्ठी एवं किसान पाठशाला

❖ डॉ. राहुल कुमार सिंह, कृषि प्रसार विशेषज्ञ एवं डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, उद्यान विशेषज्ञ द्वारा कृषि विभाग द्वारा आयोजित किसान मेला एवं गोष्ठी में कृषक उत्पादक संगठन के निर्माण एवं संवर्धन एवं वैज्ञानिक विधि द्वारा फूलों की खेती विषय पर कृषकों को जानकारी दिया गया।	
❖ महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र को विशेषज्ञों द्वारा कृषि विभाग गोरखपुर द्वारा आयोजित किसान पाठशाला कार्यक्रम में प्रतिभाग कर किसानों को जागरुक किया गया।	

दिसम्बर माह के मुख्य खेती-बाड़ी के कार्य

फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

- ❖ सरसों में सफेद रतुआ के बचाव हेतु मेटालैक्सिल (एप्रॉन 35 एस॰ डी॰) 6 ग्राम प्रति किग्रा॰ बीज दर से या बैविस्टीन 2 ग्राम / किग्रा॰ बीज दर से उपचारित करें
- ❖ गेहू की सिंचित अवस्था वाली किस्मों के लिए 120 किलो नत्रजन, 60 किलो सुपर फास्फेट तथा 40 किलो पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें। नत्रजन की आधी तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बोआई के समय प्रयोग करें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा, दो बार में, पहली एवं दूसरी सिंचाई के बाद डालें।
- ❖ गेहूं की असिंचित अवस्था में गेहूँ की खेती के लिए 80 किलो नत्रजन, 40 किलो सुपर फास्फेट तथा 20 किलो पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें। बुआई के समय, 40 किलो नत्रजन तथा स्फुरद एवं पोटाश की पूरी मात्रा डालें नत्रजन की शेष मात्रा प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई पर दें।
- ❖ यदि चने की बुवाई धान की फसल कटने के बाद करनी हो तो ऐसी स्थिति में बुवाई दिसम्बर के मध्य तक अवश्य कर देनी चाहिए अन्यथा अधिक विलम्ब होने पर पैदावार कम हो जाती है।
- ❖ चने में खरपतवारो द्वारा फसल में होने वाले नुकसान से बचने के लिए बुवाई से 25-30 दिनों बाद पहली निकाई-गुड़ाई तथा 60-70 दिन बाद दूसरी निकाई-गुड़ाई करनी चाहिए।

मृदा विज्ञान

- ❖ गेहूं की फसल में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश की मात्रा 120: 60: 40 के अनुपात में (यूरिया 210 किग्रा./हे., डाई अमोनियम फॉस्फेट 130 किग्रा./हे., एम. ओ. पी. 67 किग्रा./हे.) देना चाहिए।
- ❖ गोभी वर्गीय आलू, पत्तेदार तथा जड़युक्त सभी फसलों में सिचाई दे कर डी.ए.पी., यूरिया तथा पोटाश का प्रयोग करके गुड़ाई करें तथा मिटटी चड़ायें।
- ❖ नीम्बू के कमजोर पोधो में 50 ग्राम यूरिया सिचाई के तुरन्त बाद प्रथम सप्ताह में देंगे।

❖ भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परिक्षण करवा लें तथा भूमि में उर्वरको का प्रयोग मृदा परिक्षण के आधार पर करें।

मौनपालन

❖ अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें।

❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें।

❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें।

❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो।

❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए।

पशुपालन

❖ पशुओं को ठंड से बचाने का उचित प्रबन्ध एवं पीने के लिए स्वच्छ जल का व्यवस्था करें ।

❖ दुधारू पशुओं में थैनेला रोग से बचाव के उपाय करें एवं साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें।

❖ जिन पशुओ को मुँहपका तथा खुरपका का टीका नही लगा है उन्हें टीका अवश्य लगवायें।

❖ पशुओं को अन्त:परजीवी नाशक दवाई पशु – चिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।

❖ पशुओं को संतुलित आहार दें।

❖ हरे चारे के लिये बरसीम तथा जई की बुवाई करें।

❖ पशुओ के आहार में खनिज मिश्रण एवं नमक का प्रयोग करें।

सब्जियों की खेती

❖ आलू की कुफरी बहार, कुफरी बादशाह, कुफरी अशोका, कुफरी सतलज, कुफरी आनन्द तथा लाल छिलके वाली कुफरी सिन्दूरी और कुफरी लालिमा मुख्य प्रजातियाँ है।

❖ आलू की बुआई यदि अक्टूबर में न हो पायी हो तो अब जल्दी पूरी कर ले।

❖ टमाटर की बसन्त/ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिए पौधशाला मे बीज की बुआई कर दे।

❖ प्याज की रबी फसल के लिए पौधशाला मे बीज की बुआई करे।

फलों की खेती

❖ आम एवं अन्य फलों के बाग मे जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दे।

❖ आम मे मिलिबग कीट के नियंत्रण हेतू तने और थाले के आसपास मैलाथियान 5 प्रतिशत एवं फेनेवैलरेट 0.4 प्रतिशत घूल 250 ग्राम प्रति पेड के हिसब से तने के चारो तरफ बुरकाव तथा तने के चारो और एल्काथीन की पट्टी लगाये।

❖ केले में पणृ धब्बा एवं सङन रोग के लिए 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर की दर से छिडकाव करे।

पुष्प व सगंध पौध

❖ देसी गुलाब की कलम काटकर अगले वर्ष के स्टाक हेतु क्यारियो मे लगा दे।

❖ ग्लेडियोलस मे स्थानीय मौसम के अनुसार सप्ताह मे एक या दो बार सिंचाई करे।

सहयोग			
नाम	**पदनाम**	**विषय**	**मो0न0**
श्री आशीष कुमार सिंह	प्रक्षेत्र प्रबंधक	अनुवाशिकी एवं पादप प्रजनन	**07752941868**
श्री जितेन्द्र कुमार सिहं	कार्यक्रम सहायक (प्रयोगशाला तकनीकी)	पौध संरक्षण	**08887725608**
श्री शुभम पाण्डेय	सहायक	-	**08317019891**

सह-सम्पादक मंडल			
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	**07651922058**
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	**08787264166**
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	**07007275688**
डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	**09621437547**
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	**09792099943**
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	**09453158193**

संकलन एवं सहयोग			
नाम	**पदनाम**	**विषय**	**मो0न0**
श्री गौरव कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	कम्प्यूटर	**07651922058**

सम्पादक
डा0 संदीप कुमार सिंह
(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर(उ०प्र०)
Mob no. 09453721026; Email – gorakhpurkvk2@gmail.com
website -http://www.mgkvk.in/